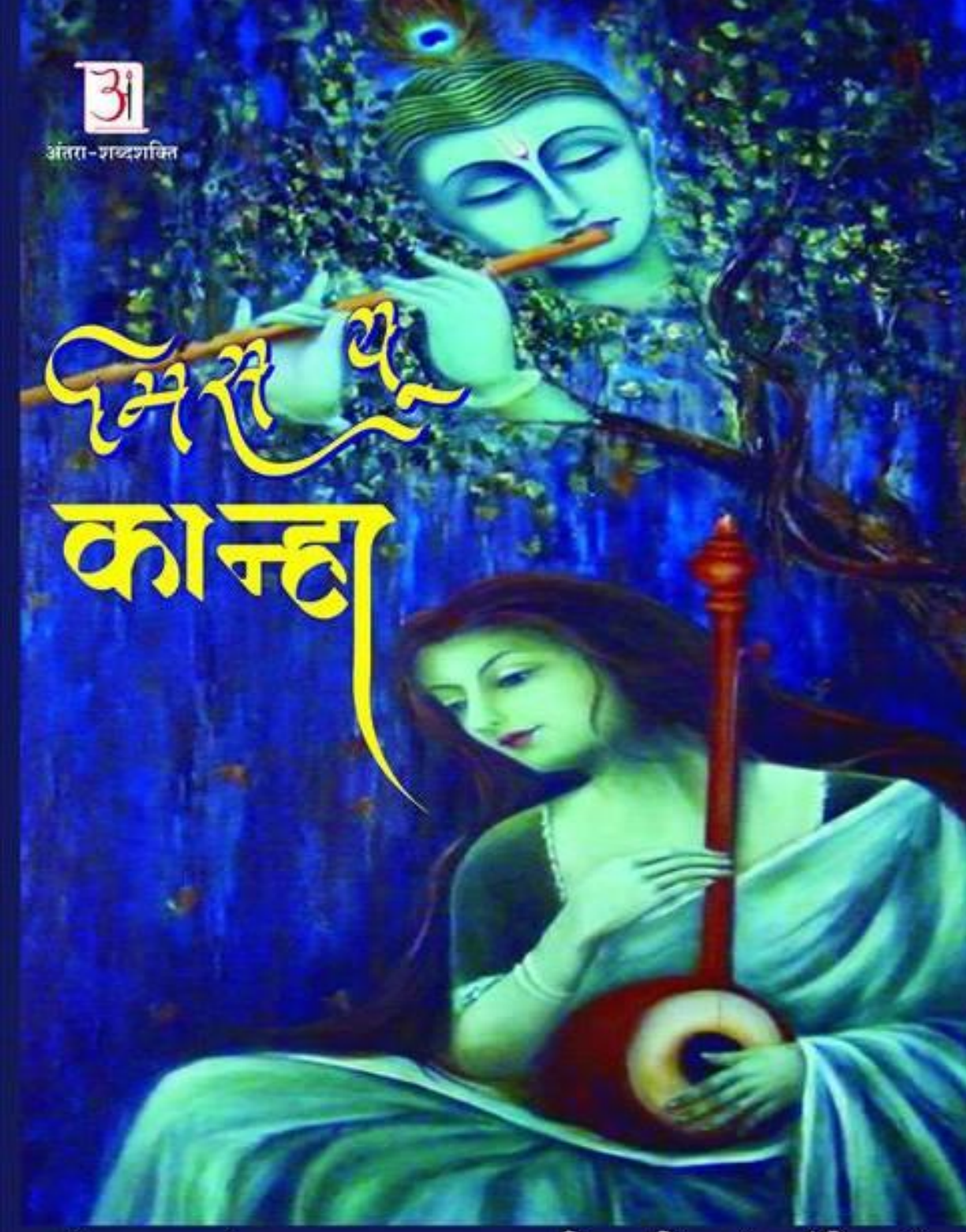

अंतरा-शब्दशक्ति
मेरे
कान्हा
दोहा-मुक्तक संग्रह
किरण मिश्रा 'स्वयं सिद्धा'

मिस यू...कान्हा

(दोहा मुक्तक संग्रह)

किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-65-9

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७,नवीन भवन,इंदौर प्रेस क्लब परिसर,इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स,वारासिवनी

Miss you Kanha by kiran Mishra Swayamsiddha

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

सादर समर्पित

तुझे छूके जब गज़ल मेरे होंठो पे गुनगुनाती है!
मेरे हर लफ़्ज में कान्हा, तेरी खूशबू उतर आती है !!

"दोहा" हिन्दी साहित्य छन्द-शास्त्र की बहुत चर्चित विधा है।दोहा ही ऐसा छंद है जिसे चालीस राग-रागनियों में गाया जा सकता है। इसलिए यह छंद सभी छंदों में शिरोमणि छंद है। आधुनिक युग में भी छन्द विधा में "दोहा"और मुक्तक" हिन्दी कवियों में लेखन के लिए पहली पसन्द है!दोहा का शाब्दिक अर्थ है- दुहना,अर्थात् शब्दों से भावों का दुहना! छन्द की दृष्टि से यह विषम मात्रिक छन्द है जो चार चरणों में विभक्त होता है,पर लिखा प्रायः दो ही पंक्तियों में जाता है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में तेरह-तेरह तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरणों में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं।

इस संरचना में भावों की प्रतिष्ठा इस प्रकार होती है कि दोहे के प्रथम व द्वितीय चरण में जिस तथ्य या विचार को प्रस्तुत किया जाता है,उसे तृतीय व चतुर्थ चरणों में सोदाहरण (उपमा,उत्प्रेक्षा आदि के साथ) पूर्णता के बिन्दु पर पहुँचाया जाता है, अथवा उसका विरोधाभास प्रस्तुत किया जाता है।

प्राचीन कवियों में कबीर,तुलसी,और बिहारी के दोहे आज भी गाये और पढ़े जाते हैं!

मेरे "दोहा लेखन" में मेरे फेसबुक मित्र जिन्हें मैं दोहा विधा का अपना गुरू भी मानती हूँ.! आदरणीय "जयप्रकाश मिश्रा जी" का प्रोत्साहन रहा है..उन्होंने ही सर्वप्रथम मुझे दोहा विधान का परिचय करा कर मुझे दोहा लेखन के लिये प्रोत्साहित किया...और फिर दोहा लेखन में मेरी लेखनी ने उड़ान भरना शुरू कर दिया मेरे कई साझा संग्रहों में और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी...दोहे प्रकाशित होने शुरू हो गये! और फिर बारी आई! दोहा और मुक्तक के रूप में मेरी एकल पुस्तक "मिस यू ...कान्हा" की!

यूँ तो मेरे दोहे नितान्त ऋंगारिक होते हैं बिहारी की भाँति पर प्रकृति और भक्ति तथा आसपास के वातावरण से भी अछूते नहीं है! चूँकि मेरे लेखन की आत्मा ही मेरे कान्हा हैं! विधा कोई भी हो गीत, गज़ल, मुक्तक, मुक्त छन्द, हाइकु, तांका, सेदोका, सायली, चोका पर मेरी करीब करीब हर रचना की आत्मा में मेरे आराध्य श्याम का ही वर्णन किसी न किसी रूप में हैं! इसलिये मेरी यह दोहावली और मुक्तक की पुस्तक में भी मेरे शब्द और भाव के जो पुष्प गुच्छ हैं वो मेरे नीले जादूगर के चरणों में ही सादर समर्पित है! और दिल की गहराइयों से सप्रेम आग्रह है कि जब तक मेरी लेखनी चले मेरे शब्दों और भावों में सदा सर्वदा आप यूँ ही विराजमान रहकर मेरी आत्मा को अपने सानिध्य से तृप्त करें....! आप सभी गुणीजनों के मध्य मैं अपनी यह पुस्तक सादर समीक्षार्थ प्रस्तुत कर रही हूँ,आप लोग पढ़कर अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया और आशीर्वाद अवश्य दें!

मन मोहे घनश्याम यूँ,राधा भूली देह!
कुंजन फिरती बावरी,याद कहाँ अब गेह!!
"मिस यू ...कान्हा"

किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"
नोयडा

आशीर्वचन

आधुनिक महिला तथा पुरूष दोहाकारों में चर्चित लेखिका तथा कवयित्री किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा" का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इन्हें साहित्य की विभिन्न विधाओं पर गहरी पकड़ है। इन्होंने जो कुछ किया वह अपने परिश्रम तथा अध्यावसाय के बल पर।बहुआयामी व्यक्तित्व तथा अथाह ज्ञान की स्वामिनी किरण मिश्रा के व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल्यांकन करना कठिन है बौद्धिक वर्ग के लिए किरण मिश्रा बहुत ही अर्थवान हैं। किरण मिश्रा की कविताओं में मिथकों,बिंबों,प्रतीकों के सार्थक प्रयोग से पठनीयता को गति मिलती है! इनकी रचनाएँ पाठकों को भीतर तक छू जाती है! चर्चित लेखिका तथा कवयित्री किरण मिश्रा के दोहों में कलात्मकता अधिक उजागर हुई है। अभिव्यक्ति को मांजने के प्रमाण अनेक दोहों में हैं और उससे नयी अर्थ छटाएँ फूटती है। दोहा लिखने में कभी-कभी स्थापित दोहाकार चूक जाते हैं लेकिन यहाँ ख्यातिप्राप्त कवयित्री किरण मिश्रा अपने दोहों में इन दोषों से मुक्त हैं। इनके दोहे पाठकों और आलोचकों को समान रूप से प्रभावित किये हैं। इनके दोहे गुदगुदाते हैं,हँसाते हैं,रुलाते हैं,तथा कभी हल्की-सी चपत लगाते हैं। इस पुस्तक में बेहद सरल भाषा और सहज शैली में संजोकर कवयित्री द्वारा दोहे और मुक्तक को प्रस्तुत करने की भरपूर कोशिश की गई है। भक्ति, ऋंगार और प्रकृति पर केन्द्रित इनके दोहे अपनी विपुलता, विविधता और काव्य-कौशल के लिए सदा याद किए जायेंगे। विशिष्ट,संवेदना और अनोखी शिल्प-संरचना से अभिरंजित इनके निम्नलिखित दोहे ध्यातव्य है...!

चपला चंचल चाँदनी,तारों की बारात।
चाँद मादक महुआ सा,भीगी शारद रात।।

नजरें तेरी तीर-सी,बाहें तेरी कमान।
दिल को घायल कर गयी,तेरी मृदु मुस्कान।।

पाँखी-पाँखी मन हुआ,लौ-सी जलती आस।
जोगन-सी इत-उत फिरूँ,ले चातक की प्यास।।

इनके दोहों और मुक्तक में लयात्मकता एवं संप्रेषणीयता का बेहतर तालमेल है।इनके शब्दों में कोमलता और मधुरता है।मुझे यह लिखते हुए गर्व हो रहा है कि इनके दोहे और मुक्तक हजारों दिलों पर राज करते हैं।वास्तव में यह पुस्तक पठनीयता को आकर्षित करने का एक सकारात्मक प्रयास है क्योंकि यहाँ विविधता का खास ख्याल रखा गया है।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की अनंत कामनाएँ करते हैं।

जयप्रकाश मिश्र (लेखक एवम् कवि)
मु.+पोस्ट- शिवहर
प्रखंड कृषि पदाधिकारी
वार्ड नम्बर-14,
जिला-शिवहर (बिहार)

दोहावली

अधर धरी जब बाँसुरी,प्रीति बही रसधार!
अंग-अंग चंदन हुआ,साँस-साँस कचनार!!

मन मोहे घनश्याम यूँ,राधा भूली देह!
कुंजन फिरती बावरी,याद कहाँ अब गेह!!

कान्हा तेरी बाँसुरी,ले उड़ि दिल का चैन!
कुंजन में राधा फिरे,दिन देखे नहि रैन!!

श्यामल कुंतल स्वर्णमुख,मृगनयना ज्यों नैन!
होँठ रसीले मदभरे,बैन करे बेचैन!!

आपा खोकर तुम बनी,किया समर्पित चैन!
मन मन्दिर में साँवरे,छवि तेरी दिन रैन!!

बाँह गहे जब साजना महकी मैं बनफूल!
श्यामल छवि निहार कर अंग सगी सब भूल!!

तन दिवले दीपक जला,राह निहारूँ आज!
मन मन्दिर तुम मोहना छाड़ि बसो सब काज!!

आया फागुन प्रीत का,राधा सा मन होय!
तन झूमे मधु मालती,संग श्याम जो होय!!

दिल ड्योढ़ी दोनो सजे,सजती गोकुल नारि!
रास रचाते गोविन्द,राधा रूप निहारि!!

छम छम नाचे राधिका,कान्हा आये द्वार!
अधरों पर धर बंसरी,अद्भुत रूप निहार!!

श्याम बाँसुरी प्रीत की,भीगा गोकुल गाँव!
प्रेम रस पगी राधिके,भूलीं अपना भान!!

राधे गगरी प्रीत की,जमुना तट भर लीनि!
कान्हा मारे कंकरी,सुधि-बुधि सब हरि लीनि!!

रिसती पलकें चाँदनी,ओसकनी कुम्हलाय!
मधुर मिलन की चाह में निशि कुंदन हो जाय!!

मन मुदित सौभाग्य सुभग,बेंदी सेंदुर माथ,
प्रिय देना संग सदा,...ले हाथों में हाथ!!

निरखत छवि मन बाँवरा,अद्भुत रूप अनूप!
कस्तूरी कुण्डल बसी,नैन गहे मृग रूप!!

छवि कस्तूरी मन बसी,रूप सलोने श्याम!
मृगनयनी अति बावरी,ढूँढे घट घट राम!!

प्रीत प्रीत सबहीं करे,प्रीत न जानी रीत!
जीत जीत के हार है,हार यहाँ है जीत!!

पिया जो प्याला इश्क़ दा,मदहोशी सी छाय!
अँग-अँग गंगाजल चखे,रूह पाक हो जाय!

होंठों की लाली उड़ी,ईंगुर चूमे माथ!
पल्लू शरमा के उड़ा,पिउ ने पकड़ा हाथ!!

हृदय हीन संसार में प्रीति न कोई मोल!
मानवता है रो रही रिश्ते बनते खोल!

सच की परछाईं तले,ढली झूठ की धूप!
यादें ढल रही शाम सी ज्यों अँधियारा कूप!!

काजल लागे किरकरो,सुरमा सहो न जाय!
जिन नैन में श्याम बसे,दूजा कौन समाय.!!

प्रीत न करियो पँछी सो,जल सूखे उड़ि जाए!
प्रीत करे तो मीन ज्यों,जल सूखे मर जाए!!

इन नयनों ने नयन भर,देखा तेरी ओर!
तब से ये मन बावरा,बँधा प्रीत की डोर!!

मौन प्रीत सबसे भली,बोले से दुख होय!
नगर ढिढोंरा पिट गया,सुनी न जासे होय!!

दृग उलझे टूटत कुटुम्ब,जग की है ये रीत!
मनका मन से मेल हो,सहै न जग ये प्रीत!!

नयन में गंगा जमुना,नयन में ही सागर!
नयन में जो मोती सजे,वही तो गंगाजल!!

रिसती पलकें चाँदनी,ओसकनी कुम्हिलाय!
मधुर मिलन की चाह में,निशि कुंदन हो जाय!!

मन ही मन अनुराग है,मन ही मन में प्रीत.!
मन ही मन राधा हँसीं,बन बैठे मन मीत..!!

दृग उलझे मन बावरा,मन की अद्भुत-रीत!
मन ही तुमको हारता,मन से ही मन जीत!!

ह्रद तोलो मीठे वचन फिर बोलो हरषाय!
दिल में हो जो जख्म भी,पल में वो भर जाय!

रावण मन में रम रहा,राम खड़े असहाय!
लोलुपता लंका सजी,कपट कलुष हरषाय!!

मन पूजा मन आरती,मन दीपक मन थाल!
मन में कान्हा रम रहे,मैं तो हुई निहाल..!!

दर्प त्याग शीतल हुआ,समझा मन जग रीति!
प्रेम द्वार की पालकी,कान्हा जी की प्रीति!!

घुमड़ी सघन स्मृतियाँ उमड़े दिल में मेह!
धूमिल मन पगडन्डियां,नैनन बरसे नेह!!

जिन नैनन में तू बसा,दूजा कौन समाय!
जो मन ढूँढो आपनो,पुनि तुमको ही पाय!!

पाँखी-पाँखी मन हुआ,लौ सी जलती आस!
जोगन सी इत उत फिरूँ,ले चातक सी प्यास!!

बावरा सा मन हुआ,बहकी बहकी शाम!
इश्क़ का जाम साँवरे,बस तेरे ही नाम!!

प्रीतम नैनन में बसे,दिल दरवाजा खोल!
हीरा मोती नहि कनक,प्रेम बिके अनमोल!!

आँखों से ही कर रही,बहकी -बहकी बात।
गुमशुदा हर ख्वाब हुये,शरमीली सी रात!!

मुदित कौमुदी हंस पड़ी,चाँद निहारे गात!
छूकर मुखड़ा नीर में,किया नेह बरसात!!

भरे नीर द्वो नयन में,पायल लीन्ही मौन!
परदेशी न घर आये,जतन करूँ मैं कौन!

नील सरोरुह नयन दो,धवल चाँदनी गात!
कुमुद कामिनी मन बसी,चन्दा बिहँसे रात!!

नयन नशीले कर रहे,बहकी बहकी बात!
अँगडाई ली चाँदनी,भीगी पावस रात!!

मतवारे से आँजना,बिंदी बिहँसे भाल!
मेहँदी चुगल कर गयी,साजन किये कमाल!!

कर में खनके कंगना,पायल मद में चूर!
सिर पे चुनरी लाल रँग,पिया पुकारे हूर!!

काजल बिंदी चूड़ियाँ,गोरी कर श्रृंगार!
झुमका झूले नथ जड़ी,रसवंती सी नार!!

मुदित कौमुदी हंस पड़ी चाँद निहारे गात!!
छूकर मुखड़ा नीर में,किया नेह बरसात!!

बातें तो मिश्री तेरी मुंह में घुलती जाय!
चंचल मन की बालिके दिल में जगह बनाय!!

चपला चंचल चाँदनी,तारों की बारात,
चाँद मादक महुवा सा,भीगी शारद रात!!

लाली चूनर ओढ़ के,खिली सुनहरी भोर,
पंछी चहके गगन में खुशियाली चहुँ ओर!!

अलसाया सूरज जगा,सोया चाँद विभोर!
पंचम सुर छड़े विहग,चीं चीं चूँ चूं शोर!!

नाचे मन ये बावरा,प्रीति तेरी मृदंग!
जैसे नाचे मोरनी,पावस बदली संग!!

अंग अंग सावन चढ़ा,गोरी महके बेलि,
मेंहदी रची हथेली,पांव महावर केलि!

भीगा उर बरसा नेह,नैनन उठे हिलोर!
पी से मिल सजनी खिलीं,ज्यों सावन चहुँ ओर!!

नजरें तेरी तीर सी,बाहें तेरी कमान!
दिल को घायल कर गयी,तेरी मृदु मुस्कान!

खिला खिला सा गगन है,महकी महकी भोर!
सूरज से वसुधा मिली,उजियारा चहुँ ओर!!

लाली चूनर ओढ के,पक्षी उड़े आकास!
अलियों ने छेड़े पुहुप,विकसी कली हुलास!!

चपल चाँदनी चाँद की,तारे बिहँसे गात!
कुमुद कामिनी मन बसी,महकी चहकी रात!!

ढलकी चंचल चाँदनी,तारे चले बरात!
भोर सुहागन सज रही,सूरज गगन लजात!!

कटि कुंदन करधनी,रुनझुन पायल पाँव!
झुमका चूमे गात को,अंग अंग हरषाय!!

मदिर नयन श्यामल वदन,कसित कंचुकी काय!
होंठ रसीले मदभरे,भ्रमर मुदित लहराय!!

कर में खनके कंगना,पायल मद में चूर!
सिर पे चुनरी लाल रँग. पिया पुकारे हूर!!

सूरज चहका गगन में,चाँद क्षितिज के कोर!
इठलाती नदिया चली,सागर प्रेम विभोर!

पानी पानी से मिले,राहें भले अनेक!
यही पूर्णता प्रेम की,हो जाएँ सब एक।

प्रेम पियाला जो चखे,विष भी अमृत होय,
ढाई आखर प्रेम का,पढ़ि के पंडित होय!

सच की परछाईं तले,ढली झूठ की धूप!
यादें ढल रही शाम सी,ज्यों अँधियारा कूप!!

दर्द विरह पीड़ा चुभन,देते अपने खास!
गैरों में मत खोजिये,कहाँ उन्हें अवकास!

हृदयहीन संसार में प्रीत न कोई मोल!
मानवता है रो रही,रिश्ते बनते खोल!!

विष कटारी कटुक बचन,चुभते गहरे हीव,
पल में ही दिल दूर हो,कितनी गहरी नींव!!

कुण्डलियाँ छन्द

होंठों की लाली उड़ी,ईंगुर चूमे माथ!
पल्लू शरमा कर उड़ा,पिउ ने पकड़ा हाथ!!
पिउ ने पकड़ा हाथ,गोरी अति हुई अधीर!
पिया मिलन की चाह,साँसे अब धरे न धीर!!
साँसें धरे न धीर,लो आ गई मिलन घड़ी!
मध्यम बहे समीर,होंठों की लाली उड़ी!1!

अंखियों में कजरा रचा, मांग रचा सिंदूर।
माथे की बिंदी लगे,ज्यों चंदा का नूर।
ज्यों चंदा का नूर,जुल्फ करती अठखेली।
पहने मंगल सूत्र,कहां जाती अलबेली।!
कहूँ सत्य मैं बात,अप्रतिम हो सखियों में।
आज बता दो राज,छुपा है क्या अखियों में!2!

तन ये जल कुयिला हुआ,आँखे हुईं पलाश!
निष्ठुर तेरी याद में,भूख लगे नहि प्यास!
भूख लगे नहि प्यास,लगी कैसी बीमारी!
नहीं भाय यह सेज,साँस हर लगती भारी!!
सुधबुध दी बिसराय,लौट अब आओ साजन!
असह प्रेम की आँच,जलाती है गोरा तन!3!

भरे नीर द्वौ नयन में,पायल लीन्ही मौन.!
परदेशी न घर आयें,जतन करूँ में कौन.!
जतन करूँ मैं कौन,रात नागिन सी लागे,
डरु अंधेंरा घोर,...सेज दामिनी सी लागे!
चूड़ी पड़ी उदास,कंगना न खन खन करे!
नयन निहारे द्वार,आंख द्वौ नीर भरे!4!

मुक्तक

क्यूँ दान में होती हैं बलिदान बेटियाँ,
क्यूँ अस्मत पर होती हैं कुर्बान बेटियाँ,
रचती हैं सुबह से शाम तक जो छप्पन भोग
क्यूँ वही होती हैं फीका पकवान बेटियाँ!!

क्यूँ अग्नि परीक्षाएँ देती हैं बेटियाँ,
क्यूँ चढ़ती दहेज बलिबेदी पर बेटियाँ,
लहराती हैं जो विश्व के सीने पर अपना परचम,
क्यूँ अपने ही घर में अधिकार खोती हैं बेटियाँ!!

सारे घर की होती हैं रौनक बेटियाँ,
फिर भी पाती ना कोई हक बेटियाँ,
यूँ तो कानून है बनाया बराबर का,
फिर वसीयत से क्यूँ नदारद हैं बेटियाँ!!

आँसू को बनायेगीं अब मुस्कान बेटियाँ!
गढेगीं खुद से इक नया जहान बेटियाँ!
बहुत कर लिया जुर्म ये दुनिया वालों,
अब नहीं बनने वाली नदी ये महान बेटियाँ!!

नहीं बनेंगी अब लड़को की दुकान बेटियाँ!
कोख से पैदा कर घर की बढायेंगीं शान बेटियाँ!
पालेंगे बेटी,पढायेंगी बेटी,बराबरी बेटों से सिखा,
बेटी को बनायेंगी अब अपनी पहचान बेटियाँ!!

घर को फुलवारी बनाती है बेटियाँ!
सारा घर खुशियों से महकाती है बेटियाँ!
कहीं सुख की मीठी नदिया बनती हैं,
तो कहीं दुख का समन्दर भी सोख जाती हैं बेटियाँ!!

गुलदान सी महकती हूँ छूकर नज़रों से जाम करते हो!
प्यास बनकर जो बरसती हूँ इन्द्रधनुषी सी शाम करते हो!!
तेरे इश्क़ की शिवाला में गज़लें,मुकम्मल रमजान बनती है,
अहसास सज़दे में जो झुकाती हूँ लफ़्ज़ आयत से पाक लगते हो!

रतजगे तेरी आंखों में करूँ तो चैन मिले...!
उलझूँ तेरी जुल्फों में तो करार आये..!
फ़ना हो जायें जिस पल तेरी सांसों में मेरी सांसे,
बस वो इक पल जिंदगी में बार बार आये!!

दिल की सुनता कहाँ अब कौन ..साहिब!
वो तो बैठे है मन्दिर में बस मौन साहिब!
हमें भावनाओं की मशीन बना बैठे,
गढ़ रहे शब्द हम अब आौन पौन साहिब!!

ठहरी सी नदी में गहरा सा राज हो तुम,
बन्द है जो पलकों में,वो ख्वाब हो तुम,
सुबह की पहली किरण,तो सांझ का मदभरा ख्याल हो,
सच कहती हूँ,मेरे कान्हा बेमिसाल हो तुम!!"

सुकून मिलेगा जब तुमसे बात होगी!
हजार रातों में वो इक रात होगी!
निगाह उठाकर देखोगे जब तुम मेरी तरफ यारा,
वो रात ही मेरी कायनात होगी!"

मेंने इक समन्दर की प्यास देखी है!
नदी से मिलने की आस देखी है!
मिटा ना पायी बारिश की बूँदे भी उसका खारापन!
क्योंकि सिर्फ प्रेम में ही वो मिठास देखी है.!!

अब वो हसरत-ए-यार न रही जो मिलने का सबब होती थी!
आखों में गुजरती थी रातें,बातों में शाम होती थी!
अब तो बदल गये है आलम आशिकी के चार-सूँ पसरी है बस खामोशी!
जिसमे कभी-कभी बस अजनबियों सी मुलाकात होती है!!

वो अल्हड़ रसवन्ती मुझको मदिरा सी तरसाती थी!
मैं नेह उलेड़ूँ जब उस पर वो मुझको सदा सताती थी!
वो नेह चिरैया आ बैठी अब मेरे मीत के आँगन में,
मैं जिसे प्रियतमे कहता था वो भैया मुझे बुलाती थी!!

ख्वाबों की दास्ताँ मुकम्मल हो कभी यह भी तो ख्वाब है!
ख्वाबों के दरमियाँ नींदों से तकरार ये भी तो ख्वाब है.!
बुनती रहती हूँ दिन रात जो तुम्हारे ख्यालों की रूपहली चादर,
उन अहसासों को ओढ़ पलकों तले तेरा वो मुस्कुराना भी तो ख्वाब है!!

दिल की आरजू घुलती है जब इबादत में,रंग लाती है तब दुआ,
अरमान भीगते हैं सच्चे मन से भावों के,कबूल हो जाती है दुआ,
बड़ो के चरणों में नत मस्तक होने पर,हर लेती है लाख बलायें,
अपनों के सर पर हाथ रख के मुस्कुराती है,लबों पर जब दुआ!

वो इश्क ही क्या जो .....रोये ना!
दिल के जज्बात को आँसुओं से भिगोये ना!
होती नहीं मुकम्मल इश्क़ की पाकीज़गी,
जब तक इश्क़ की इबादत में अश्क़ों के मोती पिरोये ना!!"

यादों ने पलकों से कुछ यूँ गुनगुना दिया!
रात में जुगनुओं ने जैसे पर फैला दिया!
जाने क्या बात थी चाँद तेरे संग गुजारे पहलू में,
कि दिल रोया,मगर शान से चेहरा मुस्कुरा दिया!!

धड़कने दिल की जरा काबू में लाना सीख लो!
देखकर उनकी जफ़ा भी मुस्कुराना सीख लो!
एक दिन महसूस होगीउनको तेरी भी कमी!
तब तलक दिल को जरा तुम बरगलाना सीख लो!!

झूठ के मन में अकसर चोर होता है...!!
ईष्या और द्वेष से उसका गठजोड़ होता है,
ढूँढता है बेचैन होकर वो अपनी पहचान,
क्योंकि उसका विश्वास मन से कमजोर होता है!!

जिस दिन इन पलकों के हर आँसू तुम्हारे नाम कर दूँगी!
जीत डर को जमाने की हर खुशी अपने नाम लिख दूँगीं!
मुस्काऊँगी तुम्हें ठुकराकर उस दिन तुम्हारी ही बेबसी पर,
जिस दिन तुम्हारे दर्द का सरे बाजार में कत्लेआम कर दूँगीं..!!

धीरे-धीरे चाँद भी..... जलना सीख जायेगा!
धीरे-धीरे सूरज भी....पिघलना सीख जायेगा!
आयेगी उनकी याद ..जब रातों की तन्हाई में
ये दिल भी पी के अश्क बहलना सीख जायेगा!!

कुछ रिश्ते ताउम्र ...बेनाम ही अच्छे.....!!
आँखों से आँखों के बस पैगाम ही अच्छे!!
सुना है मिट जाती हैं चाहते उनकी जो मिल जाते हैं अक्सर,
अगर ये सच है तो हम नाकाम ही अच्छे....!!

गज़ल़ लिख लिख के शाम करती हूँ...!
इश्क़ में दिन तमाम करती हूँ...!
तेरे अहसासों से जिगर धुँआ धुँआ करके,
अकसर रात नींदें हराम करती हूँ.....!!!

हाथ पकड़ा और छुड़ाकर चल दिये!
प्यार से आशिकी जता कर चल दिये!
आये थे महफिल में मेरी कह रहे थे जान जो!
सुबह हुई तो घर अपने दुनिया समझाकर चल दिये!

फूल से खुशबू चुरा के खिल रहें हैं जो,
चैन मेरा छीन मुझको ही छल रहें हैं जो,
ख्वाब सारे लूटकर,बेवफा तमगा दिया..,
गैर की बाँहों में लिपटे मिल रहें हैं जो.....!!

पहले उलझी लवों से फिर गेसुओं में रात.!
फिर कतरा-कतरा उलझी धड़कनों के साथ!
आँखों से उलझी छीनकर नींदों और ख्वाबों को,
फिर रात भर जगाती रही करवटों में रात..!!"

मेरे होंठों पर दहकता शबाब...तुम्हारा गुलाब!
तुम्हारी आशिक़ी मेरा ख्वाब तुम्हारा गुलाब!
महक उठती हूँ मैं दिन भर तुम्हारी यादों में,
मेरे हर इक सवाल का जबाब तुम्हारा गुलाब!!

चाँदनी बन के बरसे खुशियाँ तेरे मन के आँगन में!
रौशन हो हर पल सितारे तेरे दिल के दामन में!
चमन के फूलों सी महकती रहें तेरी घर गलियाँ,
चाँद सूरज से चमको तुम सदा अपने जीवन में!!"

आया सावन नाचा मयूर तन तेरे आने से!
बहका मन खिल उठे नयन तेरे आने से!
आये जो तुम हुलसा कण कण मधु कानन,
रक्त गगन सुरभित पवन तेरे आने से!!

मेरी आँखों के ये छलकते जाम उनकी मधुशाला से कम नहीं!
पी के मेरी नज़रों के मय के प्याले वो कहीं मदहोश न हो जाये,
कहीं मिट जाये न फासले उनके ज्यादा करीब आने से,
बस इसी डर से अपने दिल पर वो दूरियों के दरबान बिठा रक्खे हैं!!

मैं बेगानों के मेले में बस ढूँढती रही अपनों को!
कुछ झूठे रिश्तों को कुछ टूटे हुए सपनों को!
पर दिल में लगी आग कब अश्कों से बुझी है,
कोई लाख सहलाये इन रिसते हुये जख्मों को!!

तेरे ख्वाबों के जुगनू से,मेरी आँखे चमकती हैं!
तेरी यादों के परिमल से,मेरी साँसे बहकती हैं!
खिड़कियाँ मन की जब खोलूँ दस्तक बस तेरी जाना,
तेरे ख्यालों के जादू से अब,मेरी सुबहें महकती हैं!!

जब से पलकों पर अश्कों का ठिकाना हो गया!
रात नींदो को ख्वाबों का बहाना हो गया .....।
ख्वाब रूठे,नींद लूटी,लव पे ठहरी खामोशी,
रिसते जख्मों का मौसम सूफियाना हो गया!!

पता उनका बता गयी आँखें.....!
फिर से हमको सता गयी आँखें..!
उनसे दूरिया अब कहाँ हासिल..!
जब से अपना जता गयी आँखें..!

गुम हो कहाँ तुम सदा पूछती है,
मौसम ये ज़ालिम अदा पूछती है,
बहकी फिज़ायें,ये सीली हवायें,
ये जुल्फ़े तुम्हारा पता पूछती हैं!!

नूर से तेरी...दमकता है ये शहर..
खुशबू से तेरी महकता है ये शहर
जाम तेरी मदभरी आँखों से पी
रात भर फिर बहकता है ये शहर,.!

चाँद को चाँद ने है पुकारा!
चाँद से चाँद का है नजारा!
चाँद का चाँद से ये मिलन!
चाँद को आज लगता है प्यारा!

महज दो अंगुल की दूरी पर थे!
उनके दिल की मगरूरी पर थे!
निगाह उठायी होती काश तुमने ही उस पल,
हम तो जमाने भर की मजबूरी पे थे!!

सुनो आज फिर तुम्हारा नाम लिखा!
काँपते होठों से मोहोब्बत का पैगाम लिखा!
पलकों के कोरों से अश्कों की सियाही ले,
दिल की हर धड़कन पर तुम्हें श्याम लिखा!

ये सूनी रात का मंजर सताती मुझको तन्हाई!
शहर सूना गली सूनी पवन ने ली है अंगडाई!
कहाँ तुम छुप गये वो चाँद वैरन रैन डराती है!
चलो अब लौट भी आओतुम्हारी याद आती है!
मुझे इतना ना तरसाओ कहाँ हो तुम,कहाँ हो तुम,
चलो अब मान भी जाओ..जहाँ हो तुम जहाँ हो तुम!!

दिल करता है दिल से हिसाब तो गज़ल होती है!
नजरें डालती हैं हया का हिज़ाब,तो गज़ल होती है!!
तमाम रात खेलती हैं मेरी नींद .तुम्हारी यादों से ..!
बहकते हैं तुझे छूके जो मेरे ख्वाब,तो गज़ल होती है!
होंठ करते है जब मेरे होंठों से मीठी गुस्ताखियाँ!
नर्म बिस्तर पर महकते हैं कुछ गुलाब,तो गज़ल होती है!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- किरण मिश्रा 'स्वयंसिद्धा'
जन्म	- 28 मार्च 1971
माता	- श्रीमती सावित्री देवी
पिता	- श्री कामता प्रसाद तिवारी
पति	- श्री जितेन्द्र कुमार मिश्रा
शिक्षा	- एम.ए.(संस्कृत), बी.एड., एन.ई.टी. उत्तीर्ण
शिक्षण संस्थान	- अवध विश्व विद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश
पता	- फ्लैट नं. 1506, टावर ए-9, जे.पी.क्लासिक, सेक्टर-134, नोयडा, उत्तर प्रदेश, 201304
मो.नं.	- 9958437755
ई मेल	- iimkiranmishra@gmail.com
कार्यक्षेत्र	- पूर्व आकाशवाणी उद्घोषिका, वर्तमान में गृह संचालिका

प्रकाशन

1. झाँकता चाँद (साझा हाइकु संग्रह), 2. हायकु की सुगंध (साँझा हाइकु संग्रह) 2017, 3. कस्तूरी की तलाश (विश्व की प्रथम रेगा संग्रह), 4. तांका की महक (सांझा ताँका संग्रह), 5. हाइकु मंजूषा (सांझा हाइकु संग्रह), 6. सुगंधा (हाईकु संग्रह), 7. सृजन समीक्षा (समीक्षा पत्रक)।

सांझा प्रकाशन 8. गुलनार, .9 आखर, 10. अनुभूति, 11. मृगनयना, 12. अविरल धारा, 13. उजास, 14. अभिव्यक्ति, 15. साहित्य उदय, 16. अपूर्वा, 17. अनुबंध, 18. भारत के युवा कवि एवं कवियत्रियाँ, 19. नारी सागर, 20. अपना ज्ञान तिरंगा, 21. कस्तुरी की तलाश (समीक्षा पत्रक), 22. संदल सुगंध, 23. नव काव्यांजलि, 24. भाव कलश, 25. गंगा की गोद में, 26. तेरे मेरे शब्द, 27. काव्यांजलि

हिन्दी सागर, राजस्थान पत्रिका, लोकजंग (मध्यप्रदेश), सौरभ दर्शन (राजस्थान), दैनिक मैट्रो (नोयडा), नवभातर, टू मीडिया, टू टाइम्स, अमर उजाला (नोयडा), नवप्रदेश, वर्तमान अंकुर एवं भारत के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा ई पत्रिकाओं जैसे - प्रयुक्ति (दिल्ली), अंतरा शब्द शक्ति, साहित्य पीडिया, कागज दिल, अमर उजाला आदि में नियमित रचनाएं प्रकाशित

सम्मान

1. हायकू मंजूषा रत्न सम्मान वर्ष 2017, 2. श्रेष्ठ हिन्दी कवयित्री सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच 2017), 3. काव्य सागर सम्मान 2017 (साहित्य सागर), 4. श्रेष्ठ युवा रचनाकार सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच), 5. नारी सागर सम्मान 2018(विश्व हिन्दी रचनाकार मंच), 6. साहित्य के दमकते दीप साहित्य सम्मान (2017), 7. मात्सुओ बासो कलम की सुगन्ध सम्मान, 8. सर्वोत्कृष्ट कलम की सुगंध सम्मान (अर्णवकलशएसोसिएशन), 9. भाषा सारथी सम्मान 2018 (मातृभाषा उन्नयन संस्थान), 10. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, 11. यूमेन आवाज सम्मान 2018, 12. काव्य सम्पर्क सम्मान 2018, 13. गंगा काव्य गौरव सम्मान, 14. भाव कलश रचनाकार सम्मान 2018

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
९५, नेहरु चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अनुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88666-65-9
मूल्य- 55/-